प्रा क्क थ न

प्रा क्क थ न

हरिशंकर परसाईंजी आधुनिक हिंदी साहित्य के एक सफल और अप्रतिम व्यंग्यकार है। स्वातंत्र्योत्तर कालखंडमें हास्य व्यंग्यकी एक विशेष धारा प्रवाहित हुयी और कुछ आगे चलकर इसमें से व्यंग्य ने अपना एक अलग व्यक्तित्व प्राप्त कर लिया। इस कार्य में सबसे बड़ा योगदान हरिशंकर परसाई का रहा है। अपने समय के तीखे अनुभव से उत्पन्न तथा समकालीन लेखन की धारा से जुडा हुवा उनका व्यंग्य लेखन लोगों को प्रभावित करता है।

शिक्षक होने के नाते मुझे हरिशंकर परसाईंजी की `सदाचारका तावीज` तथा `भोलाराम का जीव` जैसी कहानियाँ पढ़ने और पढ़ाने का मौका उपलब्ध हुवा। शायद तबसे मैं उनके व्यंग्य लेखन की ओर विशेष रूपसे आकर्षित हुयी। यही आकर्षण रूचि में बदल गया और डॉ. के.पी.शहा जी के निर्देशन में इस विषय के संदर्भ में अधिक गहराई से जानने की मेरी इच्छा साकार हो गयी।

परसाई मनुष्य जीवन के सफल चितेरे हैं। जीवन के घात-प्रतिघातों से जुझते हुवे उन्होंने समाज के व्यापक धरातल को अतिशय बारीकी से देखा, परखा है। इस प्रयास में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक तथा व्यक्तिगत जीवन में कुछ विसंगतियाँ सामने आयी, जिन्हें अपने व्यंग्य के माध्यम से परसाईंजी ने व्यक्त किया है। उनके व्यंग्य की विविधता को मद्दे नजर रखते हुवे परसाईंजी के व्यंग्य का स्वरूप निश्चित करने का प्रयास मैं ने अपने इस शोध-प्रबंध में किया है। इस सिलसिले में कुछ प्रश्नोंका उत्तर ढूँढना आवश्यक हो गया। वे प्रश्न निम्नप्रकार के है -

ब) परसाईंजी एक सफल व्यंग्य लेखक हैं। `मनुष्य` और संपूर्ण `समाज` को उन्होंने अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। ऐसी स्थिति में निर्मित व्यंग्य का स्वरूप कैसा है?

ब) परसाईंजी सामाजिक प्रतिबध्दता माननेवाले लेखकों में से एक है। बदलती हुयी सामाजिकता का यथार्थ वर्णन उनमें मिलता है। फिर भी यह प्रश्न उपस्थित होता है कि, परसाईंजी के व्यंग्य का उद्देश्य क्या है?

क) परसाईंजी के व्यंग्य लेखन में एक विशेषता विकास क्रम देखने को मिलता है। व्यक्तिगत परिवेश से बाहर निकलकर जब वे सामाजिकता के विस्तीर्ण परिवेश में प्रवेश करते है, तो क्या उनमें कहानियों की विधि की दृष्टिसे विविधता पायी जाती है?

इन प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करते समय मैं ने हरिशंकर परसाईंजी की कहानियों में व्यंग्य के स्वरूप का अनुशीलन करनेकी कोशिश की है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्यायमें परसाईंजी के जीवन का सामान्य परिचय दिया है। उनका जन्म, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, साहित्य साधना के दौर का उल्लेख करते हुवे उनकी विविधायामी साहित्य रचनापर प्रकाश डाला है। इस प्रयास में एक विशेषता उद्देश्य सामने रखा था कि, साहित्य-कार की कृतियों को समझाते हुवे ही उनके व्यक्तित्व का परिचय पाना अधिक बेहतर होगा। उनके वैशिष्ट्यपूर्ण व्यक्तित्व को उजागर करना ही मुख्य मकसद रहा है।

द्वितीय अध्याय - हिंदी में व्यंग्य साहित्य की परंपरा - प्रस्तुत अध्यायमें मैं ने प्राचीन काल से चली आ रही व्यंग्य की परंपरा का उल्लेख किया है। इस परंपरा में कबीर से लेकर भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनके समकालीन लेखकों को एक कड़ी में बाँधने का प्रयास किया है। पूर्ववर्ती परंपरा के साथ साथ परसाईंजी के समकालीन व्यंग्यकारों का भी उल्लेख किया है, ताकि व्यंग्य लेखन की एक अखंड परंपरा हमारे सामने साकार हो उठे।

तृतीय अध्याय- व्यंग्यका स्वरूप - महत्व और प्रकार - व्यंग्य लेखन की परंपरा में आज के व्यंग्य का स्वरूप निर्धारित करने का प्रयास मैं ने इस तृतीय अध्याय में किया है। स्वातंत्र्योत्तर कालखंडमें प्रगतिवादी आंदोलन के रूपमें हास्य-व्यंग्य की एक धारा निर्मित हुई थी। इस धाराका व्यंग्य हास्य से अलग है, केवल मनोरंजन करना उसका उद्देश्य नहीं है, बल्कि वह परिवर्तन की कामना करता है। इस दृष्टि से उसका महत्व साबित करने का प्रयास किया है। इस प्रयासमें व्यंग्य के जो विविध प्रकार सामने आये, उनका जिक्र किया हैं। इस सिलसिले में विषय की व्यापकता साकार हो उठी है।

चतुर्थ अध्याय - हरिशंकर परसाईंजी की कहानियों में व्यंग्य - चतुर्थ अध्याय मेरे लघु शोध - प्रबंध का प्राण है। हरिशंकर परसाईंजी की कहानियों को पढ़ने के बाद जो कुछ मैंने महसूस किया, उसे इस अध्याय में अभिव्यक्त किया है। समाज में पायी जानेवाली विसंगतियों को अपनी कहानियों के द्वारा व्यक्त करने की कोशिश परसाईंजी ने की है। इस कोशिश में उनकी कहानियों में निम्नप्रकार का व्यंग्य पाया जाता है।

१) सामाजिक।

२) धार्मिक।

३) राजनीतिक ।

४) प्रशासनिक ।

५) साहित्यिक ।

६) व्यक्तिगत ।

पांचवा अध्याय - उपसंहार - परसाईंजी की कहानियों में व्यक्त व्यंग्य पर विचार करते समय जो निष्कर्ष हाथ आये हैं, उन्हें उपसंहार के पाँचवें अध्यायमें रखा हैं। एक प्रभावी व्यंग्य लेखक के नाते परसाईंजी की जो विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है, उनकी ओर संकेत करते हुवे उनके लेखन के विकासक्रम को भी अंकित करने का प्रयत्न किया है।

अंतमें सहायक ग्रंथों की सूची जोड़ दी है, जो शोध-प्रबंध की निर्मिति में विशेष सहायक रही है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध डॉ. के.पी.शहा जी के कृपापूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। यह बात मेरे लिये विशेष गौरव की है। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर आपने मेरी सहायता की है। ऐसी स्थिति कई बार उत्पन्न हुवी कि, जिसमें शोध प्रबंध अधूरा रहने की संभावनाएँ उपस्थित हुवी थी। परंतु आपके बार बार सहयोग करने से यह शोध प्रबंध पूरा हो पाया है। आभार-प्रदर्शन की औपचारिकता को निभाकर मैं आपके ऋण से मुक्त होना नहीं चाहती, क्योंकि आपसे हमेशा प्रेरणा तथा कृपायुक्त स्नेहभाव पाना चाहती हूँ। तथापि आपके कृपा पूर्ण दिग्दर्शन के लिये मैं अतीव कृतज्ञ हूँ।

इस प्रकार के वाक्य नहीं लिखे जाने चाहिए

मेरे इस शोध कार्य के लिये श्री प्रिन्स शिवाजी मराठा बोर्डिंग हाऊस की कार्यकारिणीके सदस्योंका तथा न्यू कॉलेज के प्राचार्य डॉ.के.आर.यादव जी का विशेष प्रोत्साहन मिला। महाराष्ट्र हायस्कूल के प्राचार्य, श्री डी.बी.पाटील जी का आशीर्वाद मेरी अनेकों समस्याओं में सफलता देता रहा है। इन सबका मन:पूर्वक आभार मानना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

न्यू कॉलेजके हिंदी विभाग प्रमुख प्रा.श्री.शरद कणबरकर जी मेरे पथ प्रदर्शक हैं, जिनका सक्रिय योगदान मेरे इस शोध कार्य में महत्वपूर्ण रहा है। प्रा. शशिकांत फडणीस तथा प्रा.वेदपाठकजी का भी मुझे सहयोग मिला है। साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय तथा न्यू कॉलेज के ग्रंथपाल श्री पी.सी.पाटील एवं अन्य सभी कर्मचारियों का मुझे सामग्री उपलब्ध करा देने में बहुत बड़ा हाथ रहा है। इन्हें धन्यवाद देते हुवे मैं आभार व्यक्त करती हूँ। भविष्य में भी इन सभी लोगों से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना रखते हुवे मैं अपना यह लघु शोध प्रबंध अवलोकन के लिये समीक्षकों के सामने रखती हूँ।

आपकी कृपापार्थी।

(प्रा.सौ.वसुंधरा दि.किल्लेदार)

कोल्हापुर.
दिनांक : 28/11/88